ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 92-93
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

# पं0 दीनदयाल उपाध्याय और एकात्म मानववाद

**देवेन्द्र मणि त्रिपाठी**
प्रधानाचार्य, राष्ट्रीय इण्टरमीडिएट कालेज, भुजवली प्रमुख, कुशीनगर (उ0प्र0), भारत

**Received- 20.11.2019, Revised- 23.11.2019, Accepted - 26.12.2019 E-mail: - sambadindia@gmail.com**

***सारांश : पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने अपने चिंतन में जिस भारत की कल्पना की उसी निर्माण हेतु एक विचाराधारा संशलिष्ट किया जिसे हम 'एकात्म मानववाद' के नाम से जानते हैं । उनकी महती इच्छा थी कि भारत अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठता के मूल्यों से जाना जाय। वे भारत के पारंम्परिक, सांस्कृतिक चेतना के संवाहक थे। पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी भारत के सांस्कृतिक सम्पन्नता के बारे में कहते है " हमारा ध्येय संस्कृति का सिर्फ संरक्षण ही नही उसे गति देकर सजीव व सक्षम बनाना है, इसके केन्द्र में मानव होगा। मनुष्यता का आधार भौतिक सम्पन्नता नही सांस्कृतिक, नैतिकता का वैभव व मूल्य होने चाहिए। मानव का परिवार, समाज, राष्ट्र, मानवता, सृष्टि और परमेष्टि से आत्मीय एकात्मकता होगी तथा मानव इन सभी से सह अस्तित्व स्थापित करेगा।***

***कुंजीभूत शब्द– कल्पना, निर्माण, विचाराधारा, सांस्कृतिक, श्रेष्ठता, पारंम्परिक, संवाहक, सम्पन्नता ।***

पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी कहते है कि विश्व का ज्ञान हमारे लिए धरोहर है। मानव जाति का अनुभव हमारी सम्पत्ति है। विज्ञान को हम अनुभव का साधन बनायेगें। जबकि भारत हमारी रंगभूमि है, भारत की कोटि कोटि जनता पात्र ही नही प्रेक्षक भी है। इसके रंजन और आत्मसुख के लिए हमें सभी भूमिकाओं का निर्धारण करना है। हम विश्व प्रगति के लिए दृष्टा ही नही अपितु साधक भी है। केवल वैश्विक उपलब्धियों को ही नही हम अपने राष्ट्र की मूल प्रकृति, प्रतिभा स्व प्रकृति को पहचान कर अपनी परम्परा और परिस्थिति के अनुरूप भविष्य के विकास क्रम के निर्धारण की अनिवार्यता को याद रखें, स्व के निरीक्षण के बिना न तो स्वतंत्रता सार्थक हो सकती है और न तो कर्म चेतना जागृत हो सकती है, जिसके अन्तर्गत स्वाधीनता स्वेच्छा और स्वानुभवजनित सुख हो। जहाँ अज्ञान, अभाव और अन्याय न हो।

जहाँ हम सुदृढ हो और सुसंस्कृति एवं सुखी राष्ट्र जीवन का षुभारम्भ करे। पं0 दीनदयाल उपाध्याय समकालीन परिस्थितियों के लिए कहते है कि " हिन्द महासागर और हिमालय से परिवेष्ठित भारत खण्ड में जब तक एकरसता, कर्मठता, समानता, सम्पन्नता, ज्ञानवता, सुख और षान्ति की सप्त जान्ह्वी का पुण्य प्रवाह नही ला पाते हमारा भागीरथ तप पूरा नही होगा। इस प्रकार जिसने राष्ट्रीय अस्मिता और संस्कृति के साथ सम्पूर्ण मानव सभ्यता की बेगमयी प्रवाह को संमृद्ध करने की मनःस्थिति से जिस भारतीय संस्कृति को अपने चिंतन का आधार बनाया वही आधार स्वरूप "एकात्म मानववाद" के रूप में प्रस्फुटित हुआ।

प0 दीनदयाल उपाध्याय कहते है " हम भारत को न तो किसी पुराने समय की प्रतिकृति बनाना चाहते है और न तो अमेरिका और रूस की अनुकृति। प0 दीनदयाल उपाध्याय जी ने मनुश्य के सर्वागीण विकास में 'शरीर' 'मन' 'बुद्वि' के समुच्चय को महत्वपूर्ण माना है। व्यक्ति समाज सेवा की भूमिका से ही अपना सम्पूर्ण विकास कर सकता है। वे कहते हैं कि ऐहिक सम्पन्नता के स्थान पर समाज की समृद्वि को वरीयता मिलनी चाहिए। प0 दीनदयाल उपाध्याय पुरूषार्थ चतुष्टय का विश्लेषण करते हुए इसे तुरूणोपाय की संज्ञा दी है। उनका कथन है कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारो पुरूषार्थे पर आधारित हिन्दू जीवन दर्शन ही हमारा मूल आधार होना चाहिए। विश्व की समस्त समस्यओं का निदान हिन्दुत्ववाद हैं। उनका मानना है कि यही ऐसा जीवन दर्शन है जो जीवन का विचार करते समय उसे टुकडों मे विभक्त नही करता अपितु सम्पूर्ण जीवन को एक ईकाइ मानकर उसका विचार करता है। इसलिये समस्त व्यवस्था का हल एकात्म मानववाद में समाहित है। समन्वयात्मक, संगठित और एकात्मवादी स्वरूप में व्यक्ति का व्यक्तित्व सम्पूर्णता को प्राप्त करता है।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय भारतीय चिंतन की एक ऐसी परम्परा को विकसित करने का प्रयत्न करते है जिससे वह नूतन वैश्विक विचार परम्परा का एक समृद्व और सार्थक भाग बन सके, वे कहते है कि मानव के समग्र एवं संकलित रूप में स्थापित करते हुये एकात्म मानववाद को भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यो के साथ राष्ट्रीयता, प्रजातंत्र, समता और विश्व एकता के आदर्शो को समन्वित रखे। पं0 दीनदयाल उपाध्याय युग द्रष्टा थे जिनके सम्मुख राष्ट्र एवं जनमत की

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

मंगलकामना का भाव सर्वोपरि था। उनके जीवनोउदेश्य में संपूर्ण सृष्टि और ब्रम्हाण्ड के कल्याण का भाव निहित है जिसका फलन ''एकात्म मानववाद'' है। जिसकी पृष्टिभूमि 'सर्वजन हिताय' व 'सर्वजन सुखाय' है।

वास्तव में 'एकात्म मानववाद' परिपूर्णता का द्योतक है जिसके ऐतिहासिक और तात्विक पृष्ठभूमि में पाश्चात्य विचार व भारतीय चिंतन संदर्भित है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय कहते है कि हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था का केन्द्र '' मानव '' होना चाहिए जो 'यत पिण्डे तत् ब्रम्हाण्डे' के न्यायानुसार सामाजिक का जीवमान प्रतिनिधि और एसका उपकरण है। भौतिक उपकरण मानव के सुख के साधन है साध्य नही। एकात्म मानववाद मनुष्य को तमाम विग्रहो से मुक्त कर मानव शरीर, मन, बुद्धि का संशलिष्ट स्वरूप प्रस्तुत करता है। हमारा आधार एकात्म मानव है जो एकात्म समष्टियों के साथ प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखता है। जीवन के विविध व्यवस्थाओं का विकास हमें 'एकात्म मानववाद' के आधार पर करना होगा।

वर्तमान समय के विभाजक प्रवृत्तियों विषमताओं से सुरक्षित रखने का ऐसा व्यापक दृष्टिकोण ' एकात्म मानववाद' ही है जो प्राचीन आदर्षो पर अवलम्बित है। यह एक वैश्विक व जीवंत विचारधारा है। यह भव्य भारत के निर्माण मे सहयोगी है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शरण परमात्मा, प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थान, मेरठ मीनाक्षी प्रकाशन।
2. देवधर, विश्वनाथ नारायण (2015) पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन खण्ड–7 व्यक्ति दर्शन, नई दिल्ली, सुरूचि प्रकाशन।
3. उपाध्याय पं0 दीनदयाल एकात्म मानव दर्शन राष्ट्रय जीवन के अनुकूल अर्थरचना, नई दिल्ली, सुरूचि प्रकाशन।
4. पाठक विनोद चन्द्र (2009) पं0 दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिंतन नई दिल्ली सत्यम् पब्लिशिग हाउस।
5. पिलानी शेखावटी, जनसंघ सममेलन में पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी का उद्घाटन भाषण, पाचजन्य 12 दिसम्बर 1955

*****